antim yatra:arunjaity.qxd 9/26/2010 7:38 PM Page 48

चित्रकूट से सतना के मार्ग पर शव यात्रा

सतना हवाई पट्टी पर हवाई जहाज में पार्थिव शरीर रखते हुए

समाचार पसरते ही पूरा चित्रकूट शोक में डूब गया। नानाजी की पार्थिव देह चित्रकूट में उद्यमिता विद्यापीठ प्रांगण में बने उन पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा के सम्मुख जनता के दर्शनार्थ रखी गई जो स्वयं नानाजी के आदर्श थे। शायद व्यवहार पटल पर उनको नानाजी से बेहतर किसी ने समझा नहीं था। हजारों लोगों ने इस स्थल पर नानाजी के अंतिम दर्शन किए और उनको अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी। यह अद्भुत सिलसिला रात भर चलता रहा, अनवरत। ऐसा होता भी क्यों नहीं, नानाजी सबके प्राणों में जो बसे थे। चित्रकूट के समूचे वातावरण में उनकी उपस्थिति का आभास होता है। चित्रकूट के कण-कण में नानाजी समाये हुए थे। इसके पूर्ण स्थिति में पहुंचने पर भगवान ने उनको शांति प्रदान की ताकि वह विश्राम कर सकें।

उनके अंतिम विश्राम की खबर सुनकर स्तब्ध मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान भोर में ही चित्रकूट पहुंच गए। उनके साथ उनके सहयोगी मंत्री, सांसद, विधायक और कार्यकर्ता थे जिन्होंने नानाजी को आखिरी नमन किया था। इनके अलावा चित्रकूट के प्रमुख मठ-मंदिरों के संत, महंत जिनमें निर्मोही अखाड़ा के महंत ओंकारदास जी महाराज, तुलसी पीठ के जगद्गुरू रामभद्राचार्य

जी, आचार्य आश्रम के राजगुरू संकर्षण प्रपन्नाचार्य महाराज, रामायणी कुटी के महंत रामहृदय दास तथा उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के सीमावर्ती जिलों के कांग्रेस, भाजपा, सपा आदि लगभग सभी राजनीतिक दलों के कई वरिष्ठ नेतागण, प्रतिष्ठित व्यवसायी और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीगण भी नानाजी को अपना अंतिम प्रणाम निवेदित करने के लिए उपस्थित हुए थे। श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद नानाजी की पार्थिव देह स्वयं मुख्यमंत्री सड़क मार्ग से चित्रकूट से सतना ले गए। सतना की हवाई पट्टी पर नानाजी की पार्थिव देह को लोगों के अंतिम दर्शनार्थ रखा गया था। नानाजी की इस आखिरी उपस्थिति में हर कोई एक क्षण के लिए उनका दर्शन करने को वेताब था। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने नानाजी के निष्काम कर्मयोग के पाठ को याद किया। उन्होंने कहा कि कहते हैं कि राजनीति काजल की कोठरी है, इसमें जो जाता है बिना दाग लिए वापस नहीं लौटता, लेकिन नानाजी काजल की कोठरी में भी रहे तो वहां से भी बेदाग निकले। जैसे कीचड़ में कमल का पत्ता रहता है, वैसे नानाजी राजनीति में रहे और 60 साल की आयु हो जाने के बाद उन्होंने राजनीति को अलविदा कह दिया और अपना पूरा जीवन दरिद्रनारायण व समाज की सेवा में समर्पित करने का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि एक संकल्प हम जरूर ले सकते हैं। सरकार के मुखिया के रूप में मुझे भी लेना चाहिए, सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं, आम जन को भी लेना चाहिए कि उन्होंने जो काम शुरू किया उसे जारी रखने आगे बढाने का संकल्प हमें लेना चाहिए।

चित्रकूट से लेकर सतना तक नानाजी को अंतिम विदाई के लिए ऐसा जनसैलाव उमड़ा जो लोगों के मानस पटल पर सदा के लिए स्थायी रूप से अंकित रहेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का कार्य करता रहेगा। नानाजी के पदचापों की आहट हमेशा की तरह चित्रकूट में हमेशा ही सुनी जाती रहेगी।

दरअसल, नानाजी के पदचिन्ह चित्रकूट में स्थायी रूप में थे। उनकी स्मृतियां हर स्थान पर काँध रही थीं। कोई विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था कि नानाजी यह देह और यह स्थान छोड़ चुके हैं। लिहाजा चित्रकूट में उनका अंतिम संस्कार आवश्यक था। संत समाज के सुझाव पर डॉ. भरत पाठक ने नारायण बलि के रूप में यह संस्कार किया। भगवान राम ने अपने पिता दशरथ की मृत्यु पर चित्रकूट में इस विधि-विधान से ऐसा संस्कार किया था। ऐसा उल्लेख धर्म सिंधु,